* सूफी दर्शन *

- अर्थ
- उदय के कारण
- सूफी दर्शन की अवधारणा / सिद्धांत
- चिश्ती सिलसिला एवं विशेषताएं
- प्रभाव

सूफ / सफ
- → ऊनी वस्त्र
- → पवित्रता / शुद्धता

सूफी दर्शन की अवधारणा / सिद्धांत
- → फनाफिल शैख
- → फनाफिल रसूल
- → फनाफिल सिल्लाह
- → सात घाटियों की अवधारणा

उदय के कारण - (1) इस्लाम के अंतर्गत उदारवादी स्वरूप को आगे बढ़ाना।

पीर → गुरु

मुरीद → शिष्य

खानकाह → निवास स्थल

फना → जला देना (सांसारिकता से अलग हो जाना)

फना → बका

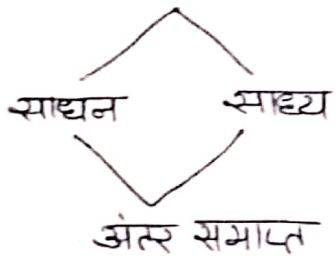

अद्वैतवाद

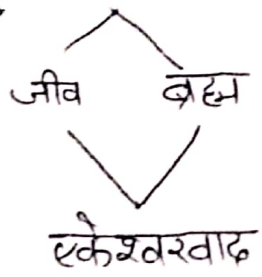

Scanned with CamScanner

अर्थ :-

सूफी शब्द की उत्पति 'सूफ / सफ' शब्द से मानी जाती है। सफ का एक अर्थ ऊन से बने और वस्त्र है तो कुछ विद्वान इस शब्द की अरबि शब्द 'सफा' से मानते है। जिसका अर्थ है शुद्धता। इस प्रकार जो अपने आचरण और व्यवहार में जो पवित्र हो सूफी कहलाया। इस प्रकार सूफी वह है जो अपने दिल में खुदा के सिवा किसी और का ध्यान न करे और अपने व्यक्तित्व को सांसारिक मामलो से अलग रखें। कुल मिलाकर सूफीवाद इस्लाम की वह धार्मिक संरचना है जिसमें बाह्य क्रियाओं की अपेक्षा आंतरिक।

उद्भव का कारण :-

सूफी मत के उद्भव के संदर्भ में विभिन्न मत दिये गये। इतिहासकार ताराचंद्र के अनुसार अरब प्रायद्वीप में इस्लाम का उद्भव हुआ और इस्लामिक राज्य की स्थापना हुई जिसने विस्तारवाद पर बल दिया। अतः तलवार के आधार पर चलने वाली राजतंत्रीय व्यवस्था को संचालित करने हेतु इस्लाम की उदारवादी व्याख्या आवश्यक मानी गई। इसी क्रम में इस्लाम का उदारवादी स्वरूप सूफी मत के रूप में सामने आया।

→ डॉ. आबिद हुसैन ने सूफी मत के उद्भव को

Scanned with CamScanner

कृषि क्षेत्रों से जोड़ते हुए कहा कि अरब देश की भूमि मरुभूमि थी जहाँ कबिलाई जीवन था। जब इनका संपर्क कृषि भूमि से हुआ तो जीवन में स्थायित्व आया अतः इस्लाम के उदारवादी स्वरूप को ग्रहण करना आवश्यक हो गया। इस उदार स्वरूप के विकास के क्रम में सूफी मत का विकास हुआ।

⇒ सूफी मत के उदय को तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक परिस्थितियों के संदर्भ में समझा जा सकता है। वस्तुतः मोहम्मद साहब की मृत्यु के पश्चात् खलिफाओं के शासन में आपसी वैमनस्य तथा शासक वर्ग की विलासिता ने ऐसी स्थिति पैदा कर दी की मानव को विवश होकर ईश्वर की ओर जाना पड़ा अतः सुफीवाद ने इस्लाम की आक्रामकता को तिलांजलि देकर रहस्यवाद को अपनाया। इस तरह सुफीवाद इस्लाम का रहस्यवादी रूप है जिसमें प्रेम, मानव सेवा, ईश्वर के प्रति समर्पण की तीव्र भावना मिलती है।

सूफी दर्शन -

सूफी दर्शन में 3 सीढ़ीयों का उल्लेख मिलता है - (i) फनाफिल शैख अर्थात् अपने पीर में लीन हो जाना।

(ii) फनाफिल रसूल अर्थात् रसूल या पैगम्बर में लीन होना।

(iii) फनाफिल लिल्लाह अर्थात् स्वयं को खुदा में लीन करना।

Scanned with CamScanner

इन सीढ़ीयों पर चढ़ने के लिए सालिक (साधक) को निम्नलिखित अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है—

(1) इबूदियत :- यह मानव की सामान्य अवस्था है। इसमें मानव गुण, अवगुण से युक्त रहता है। और वह सांसारिक बंधनों से युक्त (उलझा) रहता है। अतः साधक इन अवगुणों को अर्थात बंधनों को नष्ट करने का प्रयास करता है।

(2) शरियत :- साधक के लिए आवश्यक है कि वह शरियत के नियमानुसार अपने मस्तिष्क को अनुशासित करे जैसा कि कुरान में अंकित है कि ईश्वर की आज्ञा का पालन करो, पैगम्बर की आज्ञा का पालन करो और शाहे वक्त अर्थात अपने समय के शासक की आज्ञा का पालन करो।

(3) तारिकत - प्रेम की अवस्था में प्रवेश करने पर साधक की आत्मा ईश्वर से अत्यधिक प्रेम करने लगती है। 'अल हुज्वीरी' ने कहा कि मानव का ईश्वर के प्रति प्रेम उसके पवित्र हृदय का लक्षण है। ईश्वर से साक्षात्कार करने की उत्कृष्ट इच्छा उसे पीर के समीप लाती है। क्योंकि बिना उसके वह अपने आचरण को शुद्ध करने और इच्छाओं को नियंत्रित करने में असहाय पाता है। अतः साधक को पीर से आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त होता है।

Scanned with CamScanner

(4) मारीफत :- इस अवस्था में प्रवेश करने पर साधक सांसारिक इच्छाओं को हृदय से निकाल देता है और आत्मा को पूर्णतः शुद्ध कर लेता है। इस अवस्था में तर्क को त्यागना पड़ता है।

(5) हकीकत :- इस अवस्था में साधक को सात्विक (सूलज्ञान) प्राप्त होता है कि साधक का उद्देश्य तो हृदय की शुद्धता और ईश्वर (प्रेमिका) से मिलना है।

(6) फना एवं बका की अवस्था :- फना की अवस्था को सूफी 'स्व' यानि 'अपने आप' के विनाश की अवस्था अथवा सांसारिक प्रवृतियों के विनाश की अवस्था कहते हैं। इसमें साधक ईश्वर को अपने सम्मुख देखता है और बका की अवस्था में वह उस ईश्वर के साथ एकाकार हो जाता है। आत्मा - परमात्मा का अंतर समाप्त हो जाता है अर्थात अद्वैत की स्थिति आ जाती है। यही अवस्था 'फनाफिल लिल्लाह' कहलाती है।

सूफी दर्शन का विकास :-

सूफी मत का विकास अरब क्षेत्र में 8 वीं सदी में दिखता है। इसका आरंभिक केंद्र मदीना, बासरा में था। 8 वीं सदी में एक महिला सूफी 'रविया', बासरा में मौजूद थी। आगे चलकर मंसूर अल हज्जाज

Scanned with CamScanner

ने ईश्वर की सर्वव्यापकता का सिद्धांत दिया और कहा कि मानव ईश्वर का अवतार हो सकता है और स्वयं को 'अनहलक (मैं ही ईश्वर हूं।)' कहा। फलत: रूढ़िवादी तत्वों ने इसका विरोध किया और इसे फांसी दे दी गई।

⇒ अलगिजाली ने इस्लाम के परम्परावादी तत्वों एवं सूफियों के बीच समन्वय लाने का प्रयास किया। उसने कहा कि ईश्वर तथा उसके गुणों का ज्ञान तर्क से प्राप्त न होकर आत्मज्ञान से ही प्राप्त हो सकता है। इस तरह अलगिजाली ने सूफी मत को इस्लामिक जगत में लोकप्रिय बनाया।

⇒ इब्न उल अरबी प्रथम सूफी था जिसने 'वहदत - उल - वजूद' का सिद्धांत दिया और कहा कि ईश्वर सर्वव्यापक है और सबमें उसकी झलक है।

⇒ सूफी संगठित रूप में तब सामने आये जब उनके खानकाह एवं सिलसिलों का विकास हुआ। प्रत्येक सिलसिला का एक अध्यात्मिक प्रमुख (पीर) होता था। वह अपने मुरीदों के साथ खानकाह में रहता था (खानकाह - निवास स्थान) तथा प्रत्येक ~~पीर~~ पीर अपने वली (उत्तराधिकारी) की नियुक्ति करता था।

Scanned with CamScanner

→ सूफीयों ने श्रम की महत्ता पर बल दिया। वे जिविका निर्वाह के लिए कार्य करने पर बल देते थे। इसलिए वे बुनकर एवं कृषक का कार्य भी करते थे। इस तरह सूफी संत कोई एकांत जीवन व्यतीत नहीं करते थे।

चिश्ती सिलसिला :-

भारत में सूफीयों का सर्वप्रथम और सर्वप्रमुख सिलसिला चिश्ती सिलसिला था। इसकी स्थापना ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती ने की। ये मोहम्मद गौरी के समय भारत आये और अजमेर में अपना खानका बनाया। ये भारत के अद्वैतवादी दर्शन में विश्वास रखते थे। इनका कहना था कि ईश्वर के समक्ष सभी समान हैं। मानव की सेवा करना ईश्वर की सेवा करना है। इसके लिए स्वयं को उन्होंने आदर्श रुप में प्रस्तुत किया। उनके अनुसार भूखों को भोजन कराना, गरीबों के कष्टों को दूर करना, सेवाभाव से समाज से जुड़ना, ईश्वर के प्रति सच्ची निष्ठा है। इस सिलसिले के अन्य सूफी संत कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी, बाबा फरीद, अमीर खुसरो आदि थे। बाबा फरीद के उपदेश तो सिखों के गुरुग्रंथ साहिब में संकलित हैं जो दर्शाता है कि सुफीयों के विचार किसी धर्म विशेष तक सीमित नहीं थे। इसी तरह चिश्ती संत शेख गरीब ने दक्षिण भारत में चिश्ती सिलसिले को लोकप्रिय बनाया।

Scanned with CamScanner

⇒ चिश्तियों ने भारतीय परम्परा के कई तत्वों को अपनाया। फलतः ये भारत में लोकप्रिय हुये। वस्तुतः चिश्ती संत साधारण जीवन जीते थे, सरकारी पदों को स्वीकार नहीं करते थे। साथ ही चिश्तियों ने भारतीय नाथपंथी योगियों के समान कठोर शारीरिक क्रियायें भी की जिन्हें चिल्ला-ए-माकूस कहते थे। चिश्तियों ने सिर मुंडन कराना, शिष्यों को दिक्षा देना, यौगिक क्रियाओं को अपनाना जैसे कार्यक्रम अपनाये जो भारत में इनकी लोकप्रियता को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुए। इतना ही नहीं भारतीय समाज में ~~व्याप्त~~ व्याप्त वर्ण व्यवस्था जनित विषमता, बहुईश्ववाद जैसे तत्वों ने भी सूफी मत को लोकप्रिय बनाया क्योंकि सूफी संतों ने वर्ण व्यवस्था, जाति-पाँति की आलोचना कर अपने खानका का द्वार सभी के लिए खोल दिया। अतः विशाल जनमानस आकर्षित हुआ।

प्रभाव:-

(i) भारत में सूफी मत ने मानवतावादी विचारों को प्रसारित किया फलतः गैर मुस्लिम भी आकर्षित हुए। इसी क्रम में हिंदू-मुस्लिम संस्कृति का विकास हुआ।

(ii) सूफी संतों ने भारतीय धर्मग्रंथों, लोकपद्धतियों से संबंधित पुस्तकों का अध्ययन कर उसका अनुवाद किया। जैसे- मोहम्मद गौस ने

Scanned with CamScanner

हठ योग' पर आधारित पुस्तक 'अमृतकुण्ड' का अनुवाद किया तो दूसरी तरफ क्षेत्रीय भाषा / साहित्य के विकास को बढ़ावा मिला। अमीर खुसरो ने अपने साहित्य की रचना करते हुए फारसी और हिंदी शब्दों का प्रयोग कर समन्वय स्थापित किया तो जायसी ने 'पद्मावत' जैसे महाकाव्य की रचना कर साहित्यिक विकास को गति दी।

(iii) खानकाओं में विभिन्न भाषा, धर्म के लोगों के आने-जाने से गीत-संगीत के प्रयोग से एक समन्वित संस्कृति का विकास हुआ।

(iv) सूफियों ने जात-पात और वर्ण व्यवस्था को अस्वीकार कर इस्लाम के समतावादी दृष्टिकोण को लोकप्रिय बनाया। फलतः भारत के निम्न वर्ण के लोगों को समानता का एक विकल्प नजर आया। और उन्होंने इस्लाम को ग्रहण किया। इस तरह इस्लाम का सामाजिक आधार व्यापक हुआ।

(v) सूफियों के खानका एवं दरगाह एक नगर के रूप में विकसित हुए फलतः आर्थिक, व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा मिला।

किंतु दरगाह तथा धार्मिक केंद्रों पर दरगाह धार्मिक कर्मकांडी गतिविधियों का प्रचलन हुआ जिससे मध्यस्थों की भूमिका बढ़ी। तो साथ ही रहस्यवादी, चमत्कारिक पहलुओं पर बल देने से विज्ञान एवं तर्क की अवधारणा पर चोट हुई जो सूफी मत की सीमाओं को दर्शाता है।

Scanned with CamScanner